

एक नजर

शेख निखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में वाहन चोर गिरोह संक्रिया

हजारीबाग : शेख निखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल से लेकर आरोग्य अस्पताल में बाइक की चोरी हो रही है।

गुरुवार को शेख निखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में मुफर्रिसल थाना क्षेत्र अंतर्गत नूतन नगर निवासी आधीश कुमार सिन्हा की हीरो होड़ा मोटरसाइकिल जे एच 02 वाई 7290 वोरा का मामला था भी नहीं था कि शुक्रवार को आरोग्य अस्पताल से बड़कागांव हरली निवासी राजकुमार टाकुर की बाइक चोरी हो गई। उन्होंने बताया कि शुक्रवार को 11:30 बजे वह बाइक खाड़ कर अस्पताल में भर्ती आगे एक परिवार से मिलने गए थे। जब लौट कर आए देखा की उनकी बाइक गायब है। उन्होंने बाईंक को आसपास बढ़त देढ़ा। अस्पताल प्रबंधन से रसीसीटीवी फूटें ज दिखाने की गुहार लगाई। लेकिन किसी ने नहीं सुनी।

उन्होंने बताया कि सदर थाना में आवेदन देकर कारंगाई की गुहार लगाई है।

संविधान दिवस 26 नवंबर का

हजारीबाग : राष्ट्रीय सनातन एकता मंच व झारखंड अधिकारक मंच के प्रतीत्य प्रवक्ता संजय सर्वर्क ने कहा है कि भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में 26 नवंबर एक विशेष स्थान रखता है। इसी दिन, 1949 में भारत का संविधान संविधान सभा द्वारा अमीरकृत किया गया था। इसे संविधान दिवस के रूप में मनाया जाता है, 26 नवंबर 1949 का दिन आजाद भारत के इतिहास का बड़ा ऐतिहासिक दिन था। इसी दिन संविधान बनकर पूरा हुआ और उसे अपनाया गया। इसी दिन की याद में हर साल 26 नवंबर को संविधान दिवस मनाया जाता है।

संविधानक मूल्यों के प्रति नागरिकों में सम्मान की भावना को बढ़ावा देने के लिए यह दिवस मनाया जाता है। इस दिन की नीव वर्ष 2015 में रखी गई। यह वर्ष संविधान के निर्माताओं और जनक डॉ. आरोग्य अवेदकर की 125वीं जयंती वर्ष था। 26 नवंबर 2015 को सामाजिक न्याय और अधिकारिता मत्तलाय ने इस दिवस को 'संविधान दिवस' के रूप में मनाने के केंद्र सरकार के फैसले की अधिसूचित किया था। 26 नवंबर 1949 को हमारा संविधान बनकर तेयार हुआ और उसे अपनाया गया। लेकिन इस तारीख के दो महीने बाद 26 जनवरी 1950 को संविधान देश में लागू किया गया। 26 नवंबर का दिन संविधान दिवस व कानून दिवस होता है और 26 जनवरी का दिन गणतंत्र दिवस। जो हमारे लोकतांत्रिक मूल्यों, स्वतंत्रता, समानता और बहुतुकी की याद दिलाता है।

हजारीबाग में जीत के जश्न के लिए बैंड बाजा तैयार

हजारीबाग : मत्तगणना शनिवार को आठ बजे शुरू हो जाएगी। इस लेकर जीत का सपाना देख रहे विधानसभा उम्मीदवार और उनके समर्पित जश्न मनाने की तैयारी में जुट गए हैं। उन्हें इस बात का आभास है कि जीत उन्हीं की मिलेगी। इसलिए चुनाव परिणाम आगे के बाद जश्न मनाने की तैयारी चल रही है। चुनाव जीतने वाले प्रत्याशी चाहे किसी भी दल के हो वह अस्सर अपनी खुशी को जाहिर करने और जश्न मनाने के लिए बैंड बाजा और ताश पार्टी का सहाया करने लेते हैं। जामा मरिजद चौक पर कई बैंड बालों के आफिस हैं, जहाँ 15 से 20 सालिंद इंस्ट्रुमेंट पर रियाज करते दिखे। वह बैंलीटुड की लोकप्रिय गीत कोई जीत कोई हारा जैसे पुनर्नाम गीत को प्रैक्टिस कर रहे हैं। मेहरूब बैंड के मो. अरमान कहते हैं कि अब मत्तगणना परिणाम आगे चल रही है। चुनाव जीतने वाले प्रत्याशी चाहे किसी भी दल के हो वह अस्सर अपनी खुशी को जाहिर करने और जश्न मनाने के लिए बैंड बाजा और ताश पार्टी का सहाया करने लेते हैं। सपाने के बाद जश्न मनाने की तैयारी चल रही है। चुनाव जीतने वाले प्रत्याशी चाहे किसी भी दल के हो वह अस्सर अपनी खुशी को जाहिर करने और जश्न मनाने के लिए बैंड बाजा और ताश पार्टी का सहाया करने लेते हैं।

हजारीबाग में जीत के जश्न के लिए बैंड बाजा तैयार हैं। शेख निखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल और कांडला अस्पताल से लेकर आरोग्य अस्पताल के लिए यहां चुनाव चोपांडी कर रहे हैं। वह अचानक समाज सेवा काम के लिए तेयार हो रहे हैं। फिलाल, किसी प्रत्याशी की ओर सकौं निलंबित हो जाएगा? जिसे लेकर कई

लक्ष्मी नर्सिंग होम के संचालक की हत्या का पुलिस ने किया खुलासा, चार आरोपी गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : जिले के मुफर्रिसल थाना क्षेत्र अंतर्गत लालेख कोविलसान रोड में छह अमस्त को लाभी नर्सिंग होम के संचालक परशुराम प्रसाद की हत्या मामले का खुलासा हो गया है।

पुलिस ने इस मामले में शूटर उमेश कुमार पांडे और धनु पासवान को पहले ही जेल भेज चुकी है। इसके बाद ग्राम नोनावां पोर्ट थाना परशुराम को इस मामले में चार आरोपियों को पिपरात किया गया है। तब लौट कर आए देखा की उनकी बाइक खाड़ कर रखी थी। उन्होंने बाईंक को आसपास बढ़त देढ़ा। अस्पताल प्रबंधन से रसीसीटीवी फूटें ज दिखाने की गुहार लगाई।

लेकिन किसी ने नहीं सुनी।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार को 11:30 बजे वह बाइक खाड़ कर रखी थी। जब लौट कर आए देखा की उनकी बाइक खाड़ कर रखी है। उन्होंने बाईंक को आसपास बढ़त देढ़ा। अस्पताल प्रबंधन से रसीसीटीवी फूटें ज दिखाने की गुहार लगाई।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार को 11:30 बजे वह बाइक खाड़ कर रखी थी। जब लौट कर आए देखा की उनकी बाइक खाड़ कर रखी है। उन्होंने बाईंक को आसपास बढ़त देढ़ा। अस्पताल प्रबंधन से रसीसीटीवी फूटें ज दिखाने की गुहार लगाई।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार को 11:30 बजे वह बाइक खाड़ कर रखी थी। जब लौट कर आए देखा की उनकी बाइक खाड़ कर रखी है। उन्होंने बाईंक को आसपास बढ़त देढ़ा। अस्पताल प्रबंधन से रसीसीटीवी फूटें ज दिखाने की गुहार लगाई।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार को 11:30 बजे वह बाइक खाड़ कर रखी थी। जब लौट कर आए देखा की उनकी बाइक खाड़ कर रखी है। उन्होंने बाईंक को आसपास बढ़त देढ़ा। अस्पताल प्रबंधन से रसीसीटीवी फूटें ज दिखाने की गुहार लगाई।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार को 11:30 बजे वह बाइक खाड़ कर रखी थी। जब लौट कर आए देखा की उनकी बाइक खाड़ कर रखी है। उन्होंने बाईंक को आसपास बढ़त देढ़ा। अस्पताल प्रबंधन से रसीसीटीवी फूटें ज दिखाने की गुहार लगाई।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार को 11:30 बजे वह बाइक खाड़ कर रखी थी। जब लौट कर आए देखा की उनकी बाइक खाड़ कर रखी है। उन्होंने बाईंक को आसपास बढ़त देढ़ा। अस्पताल प्रबंधन से रसीसीटीवी फूटें ज दिखाने की गुहार लगाई।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार को 11:30 बजे वह बाइक खाड़ कर रखी थी। जब लौट कर आए देखा की उनकी बाइक खाड़ कर रखी है। उन्होंने बाईंक को आसपास बढ़त देढ़ा। अस्पताल प्रबंधन से रसीसीटीवी फूटें ज दिखाने की गुहार लगाई।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार को 11:30 बजे वह बाइक खाड़ कर रखी थी। जब लौट कर आए देखा की उनकी बाइक खाड़ कर रखी है। उन्होंने बाईंक को आसपास बढ़त देढ़ा। अस्पताल प्रबंधन से रसीसीटीवी फूटें ज दिखाने की गुहार लगाई।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार को 11:30 बजे वह बाइक खाड़ कर रखी थी। जब लौट कर आए देखा की उनकी बाइक खाड़ कर रखी है। उन्होंने बाईंक को आसपास बढ़त देढ़ा। अस्पताल प्रबंधन से रसीसीटीवी फूटें ज दिखाने की गुहार लगाई।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार को 11:30 बजे वह बाइक खाड़ कर रखी थी। जब लौट कर आए देखा की उनकी बाइक खाड़ कर रखी है। उन्होंने बाईंक को आसपास बढ़त देढ़ा। अस्पताल प्रबंधन से रसीसीटीवी फूटें ज दिखाने की गुहार लगाई।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार को 11:30 बजे वह बाइक खाड़ कर रखी थी। जब लौट कर आए देखा की उनकी बाइक खाड़ कर रखी है। उन्होंने बाईंक को आसपास बढ़त देढ़ा। अस्पताल प्रबंधन से रसीसीटीवी फूटें ज दिखाने की गुहार लगाई।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार को 11:30 बजे वह बाइक खाड़ कर रखी थी। जब लौट कर आए देखा की उनकी बाइक खाड़ कर रखी है। उन्होंने बाईंक को आसपास बढ़त देढ़ा। अस्पताल प्रबंधन से रसीसीटीवी फूटें ज दिखाने की गुहार लगाई।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार को 11:30 बजे वह बाइक खाड़ कर रखी थी। जब लौट कर आए देखा की उनकी बाइक खाड़ कर रखी है। उन्होंने बाईंक को आसपास बढ़त देढ़ा। अस्पताल प्रबंधन से रसीसीटीवी फूटें ज दिखाने की गुहार लगाई।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार को 11:30 बजे वह बाइक खाड़ कर रखी थी। जब लौट कर आए देखा की उनकी बाइक खाड़ कर रखी है। उन्होंने बाईंक को आसपास बढ़त देढ़ा। अस्पताल प्रबंधन से रसीसीटीवी फूटें ज दिखाने की गुहार लगाई।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार को 11:30 बजे वह बाइक खाड़ कर रखी थी। ज

संपादकीय

पार्टियों के लिए चुनाव जीतने का एकमात्र फंडा मुफ्त रेवड़ी कल्पर

न प्रदेश सरकार अटल ब्रह्म ज्योति स्कीम में बिजली संबंधी घटने की तैयारी में है। वर्तमान पात्रता 150 यूनिट है जिसे 100 करने का प्रस्ताव है जिससे लगभग 62 लाख उपभोक्ता स्कीम से बाहर हो जाएंगे। किसानों को झटका देने की तैयारी भी है जिन्हें लगभग दोगुनी महंगी बिजली मिलेगी। करदाता के पैसे से मुफ्त रेवड़ी बांटकर वोटों की फसल काटने के लिए सारे देश में मिसाल बन चुकी सरकार का यह कदम आश्वियजनक है। लगता है कि चुनाव की वैतरणी पार कर लेने के बाद अब सरकार को अपनी जेब में हुए छेद की फिक्क सताने लगी है।

गुरु गुणार अवधार

मतदाता को ही सोचना होगा
कि ऐसी ऐवडियां मले
फायदेमंट लगें मगर इनसे
सरकारी कोष पर पड़ने वाला
मार देट सबेर उसी से वसूला
जाना है। सँझ बिजली पानी
जैसे अधोसंरचनात्मक विकास
के प्रभावित होने और महांगाइं
बेरोजगारी बढ़ने जैसे अन्य
प्रभाव भी अंततः उसी के सिर
पड़ने वाले हैं। अंत में मामला
कुल मिलाकर इस हाथ दे
और उस हाथ ले वाला ही
साबित हो जाना है। यह
जागरूकता जितनी जल्द आए
उतना अच्छा होगा।



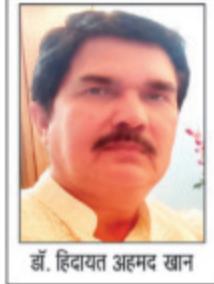
मतदाता का लालच सरकारें को ऐसे भ्रष्टाचार के लिए मजबूर करता है ? इनमें होने वाला गड़बड़ झाला परिचय का मोहताज नहीं है। कन्वादान योजना में दी जाने वाली एकमुश्त रकम की लालच में विवाहित जोड़ों का पुनः विवाह और दहेज में दिए जाने वाले सामान की सरकारी खरीद में भ्रष्टाचार की खबरें सुर्खियां रही हैं। सरकारी खर्च पर दी जाने वाली मंगलसूत्र जैसी पवित्र वस्तु की खरीद में जमकर भ्रष्टाचार होता रहा है। निजी शिक्षण संस्थानों में पढ़ने वाले वर्चित वर्गों के छात्रों की छात्रवृत्ति के वितरण में भी कठोरोंगों का भ्रष्टाचार होता रहा है। फायदा उठाने वाले चुपचाप जो मिल रहा है बहुत है की भावना से आधा पाकर पूरे पर दस्तखत कर देते हैं। सरकारी कार्डिंग और उनके आका बाकी आधा अंदर करते हैं। नेता भी मजे से अपना हिस्सा वसूलता है और वोट की फसल बोता है। रेवड़ी कल्चर पर बहस में यह भी कहा जाता है कि इससे उत्पादकता में कमी होती है। भारतीय समाज मूल रूप से संतोषी स्वभाव का है। आज का इत्जाम हो जाए , कल की कल देखेंगे की मानसिकता वाला। ऐसे में मुफ्त की रेवड़ियों से उत्पादकता प्रभावित होने का अदिश स्वाभाविक है।

इन लोक लुभावन योजनाओं पर कितनी भी बहस हो, एक बात तय है। जिस तरह से तमाम राजनीतिक दलों ने इन्हें अंगीकार किया है, ऐसी योजनाएं जल्द जाने वाली नहीं हैं। वर्चित और कमज़ोर वर्गों की सहायता बुरी नहीं है बर्तें वह सुपात्रों तक पहुंचे और सभी भ्रष्टाचार का साधन न बने। स्व. प्रधानमंत्री राजीव गांधी का रूपए में से मात्र पंद्रह ऐसे ही गरीब आदमी तक पहुंचने वाला बवान आज भी सामयिक है। बैंक खाते में सीधे जमा

होने वाली सब्सिडी रकम के जरिए यह भ्रष्टाचार कम हो सकता है।? आधार और जन-धन खातों ने इसे सुगम भी बनाया है।ऐसी मदद पूरी तरह सीधे गरीब तक पहुंचती है।? रास्ते में होने वाला भ्रष्टाचार भी रुकता है।? मगर आदमी का दीर्घकालिक फ़लवदा सड़क बिजली पानी जैसी अधेसरन्चना के विकास में है।मुफ्त रेविड्यां फौरी राहत तो देती हैं मगर उनकी कीमत पर विकास का पिछड़ना सार्वजनिक हित में नहीं है।प्रदेश सरकार लगभग पौने चार लाख करोड़ के कर्ज के बोझ तले दबी हुई है।बीस हजार करोड़ प्रतिवर्ष से अधिक की रशि सिर्फ ब्याज चुकाने में जा रही है।उस पर गाहे-बगाहे कर्ज उठाने की खबरें आती रहती हैं।सरकारी नुमाइंदे कहते हैं कि कर्ज अभी भी रिझर्व बैंक द्वारा निर्धारित शर्तों के अंदर है।मगर सिर्फ इस आधार पर और कर्ज उठाना ठीक नहीं बैठता।बढ़ते कर्ज और ब्याज का बोझ अंततः विकास प्रभावित करता है।मुद्रासंकीर्ति महंगाई बढ़ाती है जिसका भार अंततः आप आदमी पर पड़ता है।

मध्यप्रदेश सरकार का बिजला सोब्सडा में कमा का प्रस्ताव बताता है कि अब ऐसी योजनाएं राजकोषीय घटों को इस हृद तक प्रभावित करने की स्थिति में आ गई हैं कि सरकारें सोचने पर मजबूर हों। सौभाग्य से देश में रिजर्व बैंक जैसी दीर्घकालिक वित्तीय अनुशासन को देखने वाली संवैधानिक स्वायत्त संस्था है जो सच्चे अर्थों में राजनीतिक हितों से परे रहकर निर्णय लेती है। तात्कालिक चुनावी फ़ायदा देखने वाले राजनीतिक दलों से उम्मीद बेमानी है। मतदाता को ही सोचना होगा कि ऐसी रेवड़ियां भले फ़ायदेमंद लगें मगर इनसे सरकारी कोष पर पढ़ने वाला भार देर सबर उसी से वसूला जाना है। सड़क विजली पानी जैसे अधिसंरचनात्मक विकास के प्रभावित होने और महगाई बेरोजगारी बढ़ने जैसे अन्य प्रभाव भी अंततः उसी के सिर पढ़ने वाले हैं। अंत में मामला कुल मिलाकर इस हाथ दे और उस हाथ ले वाला ही सवित हो जाना है। यह जागरूकता जितनी जल्द आए उतना अच्छा होगा।

आतंकवादियों के निशाने पर पाकिस्तान अर्थात् बोया पेड़ बबूल का आम कहां से होय



महायुद्ध का खतरा

रूस के खिलाफ युक्तेन को लंबी दूरी के मिसाइल की खूली हूट कर अमेरिका, ब्रिटेन सहित अन्य पांचमी देश 'क्यामर' को ज्योता दे रहे हैं। अमेरिका के बाद अब ब्रिटेन ने युक्तेन को लंबी दूरी की स्टार्म में शैदो मिसाइलों की आपूर्ति की है जिसका रूस के अंदरूनी हिस्सों में इस्तेमाल किया गया है। बाइडेन प्रशासन ने युक्तेन को एंटी पर्सनल लैंडमाइन का इस्तेमाल करने की भी अनुमति दे दी है। ये सभी कार्रवाई



पारंपरिक हथियारों से भी हमला करता है तो रूस जवाबी कार्रवाई में एटमी हथियारों का इस्तेमाल कर सकता है। यूक्रेन द्वारा अमेरिका और ब्रिटेन के मिसाइलों के इस्तेमाल के बाद रूस ने जवाबी कार्रवाई की घटकी दी है। इसके बाद अमेरिका सहित इटली, स्पेन और ग्रीस ने यूक्रेन की राजधानी कीव शिथत अपने दूतावासों को बंद कर दिया है। अमेरिका और पश्चिमी देश परमाणु बुद्ध के खतरे को नजरअंदाज कर रूस-यूक्रेन युद्ध की आग में घी डालन पर आधार दाते हैं। यकेन संकट के बाद दुनिया का व्याख्याका बनेगा अभी वह निश्चित नहीं है। घटना कोई भी रूप ले सकती है। यूक्रेन का घटनाक्रम कुछ दिनों या कुछ महीनों का नतीजा नहीं है। बरसों से सुलग रहा ज्वालामुखी फटा है। विश्व नेताओं की यह अदूरदृश्टि है कि उन्होंने बरसों तक भावी संकट से बचाव का कोई उपाय नहीं किया। इसके विपरीत उन्होंने इसका इस्तेमाल दुनिया पर अपना दबदबा बनाए रखने के लिए किया। विश्व शांति और स्थिरता बनाए रखने की बजाय अपना वर्चस्व स्थापित करने का यह स्वाभाविक नतीजा था कि महाशक्तियां आमने-सामने आ जाएं। भारत ने इस घटनाक्रम पर जो रवैया अपनाया है वह दुनिया के लिए मार्गदर्शक हो सकता है। भारत का जोर टकराव टालने और संघर्ष को रोकने के लिए कूटनीति और बातचीत का सहारा लेने का रहा है।

चिंतन-मनन

अहिंसा का स्वरूप

आ सामान्यतः अहिंसा को निषेधार्थक माना जाता है। 'न हिंसा -अहिंसा'- हिंसा का अभाव अहिंसा है, यह इसकी एकांगी परिभाषा है। इसको सवार्णण रूप से परिभासित करने के लिए इसके विद्येयार्थ और निषेधार्थ दोनों को समझना जरूरी है। किसी प्राणी के प्राणों का वियोजन नहीं करना, इस सूत्र का हिंसा के संदर्भ में जितना मूल्य है, उससे भी अधिक मूल्य है किसी भी प्राणी के प्रति अनिष्ट चिंतन के बहिष्कार का। असत् विचार हिंसा है। असत् वचन सा है। जितना कुछ झूठ बोला जाता है, वह हिंसा की प्रेरणा से ही बोला जाता है। असत् चिंतन और असत् वाणी की तरह असत् व्यवहार मात्र हिंसा है, चाहे वह किसी के भी प्रति हो। मनष्य की प्रवृत्ति सत् और असत् दोनों प्रकार की होती है। जिस प्रवृत्ति के साथ असत् शब्द का योग हो जाता है, वह हिंसा-संवलित ही होती है। दुर्सरों के प्रति द्वेष की भावना, ईर्ष्या, उन्हें पियाने का मनोभाव और उनकी

कूरुक्षेत्र में प्रतीक्षा को रोकने के सारे प्रयत्न हिसास में अंतर्भूत हैं। दसरों के मन में भय उत्पन्न करना, उनके सामने दुखद परिस्थितियां उभार देने, उनके विकास के मार्ग में बाधा पहुंचाना आदि प्रवृत्तियां भी हिसास की परिधि में समाविष्ट हैं। इन प्रवृत्तियों का सर्वथा निरोध अहिंसा का आदर्श है। यह अहिंसा का नेट्रेटिव पक्ष है।

अपने पॉलिटिक वश में अहिंसा समता, मैत्री, संयम आदि उदात्त वृत्तियों से अनुबंधित है। यहाँ अहिंसा का वाच्यार्थ न मारने तक की सीमा में आबद्ध नहीं है। जहाँ यह प्रतिबद्धता जड़ जाती है, अहिंसा का व्यापक अर्थ एक छोटे-से संदर्भ में समा जाता है। समता का धरातल असीम है। मैत्री की पौध इसी धरातल पर फली-फूली रह सकती है। इससे आत्मापद्ध की भावना जागृत होती है। आत्मतुल की बुद्धि से प्रेरित व्यक्ति कही अहिंसा को समझ सकता है और उसका पालन कर सकता है। जो व्यक्ति छोटे और बड़े, अनुकूल और प्रतिकूल हर प्राणी के प्रति समत्व बुद्धि का विकास करता है, वह अहंसक होता है।



परिजनों के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं। यह दस्तूर है जिसे हर आतंकी हमले के बाद सरकार को निभाना पड़ता ही है। इन घटनाओं के अलावा भी पाकिस्तान के विभिन्न इलाकों में आतंकी हमलों की खुबरें लगातार आ रही हैं, लेकिन सवाल यही है कि अखिर आतंकवादियों ने पाकिस्तान में अचानक तो प्रवेश नहीं किया है। सच तो यह है कि आतंकवाद आज पाकिस्तान के लिए जो नासूर बन गया है, वह पहले कभी इसकी ढाल हुआ करता था। इन आतंकियों को लेकर पाकिस्तान पर सदा से आरोप लगते रहे हैं कि पढ़ोसी मुल्कों को डराने और धमकाने के साथ सरकारों को अस्थिर करने के लिए बड़ी तादृज में हमले करने का काम पूर्व में पाकिस्तान के द्वारा किया जाता रहा है। आतंकवादियों के हमलों से सदा परेशान रहने वाले भारत ने तो अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अनेक दफा पाकिस्तान द्वारा आतंकवादियों को प्रश्न्य देने का मामला उठाया। यह अलग बात है कि इस समस्या का कोई पुख्ता हल न तब निकला और न अब निकल रहा है। हल इसलिए भी नहीं निकल सकता क्योंकि

پاکستان مें स्थित سرकार का سदा से टोटा रहा है। پاکستان में सेना द्वारा लोकतांत्रिक सरकारों को बूटों तले रौद्रने की परंपरा का पालन होता आया है। ऐसे में आतंकवादियों को पालने और उनके बेज़ इस्तेमाल से इंकार नहीं किया जा सकता है। जहां वर्दी से काम नहीं लिया जा सकता वहां यही आतंकवादी काम आते हैं।

यहां कहना गलत नहीं होगा कि जिस आतंकवाद रूपी सांप के सपोले को दृध पिलाकर पाकिस्तान ने बढ़ा किया अब वह खतरनाक अजगर का रूप धारण कर चुका है। वह अजदहा अपनी भूख मिटाने के लिए अपने ही पालने वालों को निगल रहा है। इसके बाद इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमले कौन सा आतंकी संगठन कर रहा है या कौन करवा रहा है, व्यापिक यह समस्या पाकिस्तान ने खुद की इजाद की हुई है। बावजूद इसके आतंकवाद किसी भी स्तर पर हा और कहीं पर भी हो सही नहीं ठहराया जा सकता है। इसलिए आतंकी हमलों की जितनी भर्तसना की जाए कम होगी। जहां तक पाकिस्तान की नीति का

कातिल सड़कों पर तबाह होता जीवन एक गंभीर चुनौती



अ लीगढ़ में सड़क हादसा, यमुना एक्सप्रेसवे पर बस-ट्रक घिरी, 5 की मौत, 15 से अधिक घायल। गाजस्थान में पाली-जोधपुर हाइवे पर मरीज को एक एम्बुलेंस से दूसरे में शिप्ट करते समय डम्पर ने मारी टक्कर, चार की मौत। दिल्ली में सिमेचर ब्रिज पर एक दर्दनाक सड़क हादसे जायिया हमर्द विश्वविद्यालय के दो मैटिकल छात्रों की मौत। लखनऊ में दो अलग-अलग सड़क हादसों में बुझा समेत दो की मौत। उत्तराखण्ड के देहरादून 12 नवंबर को हुए सड़क हादसे में 6 छात्रों की मौत।

ऐसे अनेक सङ्कट हादसे पिछले दो-तीन दिन में हुए हैं। वार्कइंग भारत की सङ्कटों पर चलना अब बहुत हथेली में रखकर चलने जैसा ही होता जा रहा है। कातिल सङ्कट हादसे गंभीर एवं चुनौतीपूर्ण हैं। सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि ऐसी दुर्घटनाओं में निर्दोष लोग ही मारे जाते हैं। देश को इन कातिल एवं खुन सङ्कटों की हकीकत बताता केंद्रीय सङ्कट परिवहन मंत्रालय का एक डारने वाला आंकड़ा पिछले दिन सामने आया। मंत्रालय के अनुसार पिछले दस सालों में हुए सङ्कट हादसों में 15 लाख लोग मारे गए कमांबेश सारे देश में ऐसी घटनाएं सुनने में आती जिनमें रोज सैकड़ों लोगों की जीवन लीला समाप्त हो जाती है। भारत का सङ्कट यातायात तमाम विकास व उपलब्धियों एवं प्रयत्नों के बावजूद असुरक्षित एवं जानलेवा बना हुआ है, सुविधा की खुनी एवं हादसों की सङ्कटें नित-नयी त्रासदियों की गवाह बन रही हैं। भारत में सङ्कट दुर्घटनाएं जौते और चोटों के प्रमुख

करती है, मायावजे का ऐलान भी करती है लेकिन बड़ा प्रश्न है कि दुर्घटनाएं रोकने के गंभीर एवं प्रभावी उपाय अब तक क्यों नहीं किए जा सके हैं? जो भी हो सकता है भी है कि इस तरह की तेज़ आवास

निवारण करने के लिए ठोस कदम भी उठाए जाएंगे। कुशल ड्राइवरों की कमी को देखते हुए ग्रामीण एवं पिछड़े हिलाकों में ड्राइवर ट्रेनिंग स्कूल खोलने की ऐसी सभी विधायिकाओं में चर्चा चल रही है।

तपारा सहा दशा म ३०वा नवं कर्दम ह, लोकन इसके अलावा भी बहुत कुछ करना होगा। हमारी ट्रैफिक पुलिस एवं उनकी जिम्मेदारियों से जुड़ी एक बड़ी विडब्बना है कि कोई भी ट्रैफिक पुलिस अधिकारी चालान काटने का काम तो बड़ा लगन एवं तन्मयता से करता है, उससे भी अधिक रिश्वत लेने का काम पूरी जिम्मेदारी से करता है, प्रधानमंत्रीजी के तमाम भ्रष्टाचार एवं रिश्वत विरोधी बाबानों एवं संकल्पों के यह विभाग धड़ल्ले से रिश्वत वसूली करता है, लेकिन किसी भी अधिकारी ने यातायात के नियमों का उल्लंघन करने वालों को कोई प्रशिक्षण या सीख दी हो, नजर नहीं आता। यह स्थिति दुर्घटनाओं के बढ़ने का सबसे बड़ा कारण है। जरूरत है सड़कों के किनारे अतिक्रमण को दूर करने की, आवारा पशुओं के प्रवेश एवं बेघड़क घुमने को भी रोकने की। ये दोनों ही स्थितियाँ सड़क हादसों का कारण बनती हैं। यह भी समझने की जरूरत है कि सड़क किनारे बसे गांवों से होने वाला हर तरह का बेरोक-टोक आवागमन भी जोखिम बढ़ाने का काम करता है। इस स्थिति से हर कोई परिचित है, लेकिन ऐसे उपाय नहीं किए जा रहे, जिससे कम से कम राजमार्ग तो अतिक्रमण और बेतरतीब यातायात से बचे रहें। इसमें सदिह है कि उलटी दिशा में बाहन चलाने, लेन की परवाह न करने और मनचाहे तरीके से ओवरट्रैक करने जैसी समस्याओं का समाधान केवल सड़क जागरूकता अधियान चलाकर किया जा सकता है। यह गंभीर चिंता का विषय है कि सड़कों पर बेलगाम गाड़ी चलाना कुछ लोगों के लिए मौज-मस्ती एवं फैशन का मामला होता है लेकिन यह कैसी मौज-मस्ती या फैशन है जो कई जिन्दगियाँ तबाह कर देती हैं। ऐसी दुर्घटनाओं को लेकर आम आदमी में संवेदनहीनता की काली छाया का परसरना त्रासद है और इससे भी बड़ी त्रासदी सरकार की आंखों पर काली पट्टी का बंधना है। हर स्थिति में मनुष्य जीवन ही दाव पर लग रहा है। इन बहुती दुर्घटनाओं की नुसंस चुनौतियों का क्या अंत है?

